अध्याय : 7

स मा प न

अध्याय : 7

स मा प न

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य के विकास में कई मोड़ उपस्थित हुए। नाटक के कथ्य, शिल्प, मंचन आदि के क्षेत्र में काफी मिथ्येतर दृष्टिगत होते हैं। इस परिवर्तन के परंपरा का श्रेय जगदीशचंद्र माथुर को जाता है। उन्होंने "कोणार्क", "पहला राजा", "शारदीया" नाटकों को प्रस्तुत कर एक नया सूत्रपात किया है। इनके साथ ही मोहन राकेश ने नाटक को जीवन से जोड़कर एक अगला चरण विकसित किया। उनके "आषाढ़ का एक दिन", "लहरों के राजहंस", "आधे-अधूरे", आदि नाटक युगीन जीवन संदर्भों को कलात्मकता से प्रस्तुत करते है। डॉ॰लक्ष्मीनारायण लाल के "मिस्टर अभिमन्यू", "सूर्यमुख", "व्यक्तिगत", "अब्दुल्ला दीवाना", "सब रंग मोहभंग", "काफी हाऊस में इंतजार" आदि नाटक भी हिन्दी नाट्य-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अतः मोहन राकेश और डॉ॰लक्ष्मीनारायण लाल ने हिन्दी नाट्य साहित्य को एक नया मोड़ देकर उसकी वृद्धि की।

साठोत्तरी हिंदी नाट्य-साहित्य में अनेक नई प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इस समय काव्य-नाटक, अनूदित नाटक, लोक-नाट्य परंपरा, नुक्कड नाटक, बाल रंगमंच, कहानी, कविता और उपन्यास के नाटक रूपांतर के साथ साथ असंगत नाट्य-शिल्प के प्रयोग किये गये हैं। जिनमें असंगत नाट्य-शिल्प का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें मानव जीवन के अनेक विसंगतियों का पर्दाफाश करने की प्रवृत्ति रही है। वर्तमान का मनुष्य टूटा, हारा, थका और प्रतिदिन के जीवन से ऊबा हुआ नज़र आता है। इसी मानव जीवन के नग्न यथार्थ को चित्रित करना असंगत नाटककारों का मूल उद्देश्य रहा है। वर्तमान में भी मनुष्य जीवन में प्रचुर मात्रा में मूल्य-विघटन दिखाई पड़ता है। परिणामतः अनेक प्रकार की असंगतियाँ निर्माण

हो रही हैं। इन्हीं विभिन्न असंगतियों को असंगत नाटक प्रस्तुत करते हैं।

असंगत नाटकों का आरम्भ हिन्दी नाट्य-साहित्य में भुवनेश्वर प्रसाद के नाटकों से ~~ही आरम्भ~~ होता है। उनके "कारवा", "ऊसर" तथा "तांबे के कीड़े" नाटक महत्वपूर्ण हैं। जिनमें वर्तमान की असंगतियों का चित्रण हुआ है। उनके पश्चात् डॉ॰ विपिनकुमार अग्रवाल ने असंगत नाट्य-परम्परा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके "तीन अपाहिज" और "लोटन" ~~आदि~~ असंगत नाटक महत्वपूर्ण हैं। इन असंगत नाटककारों के अलावा डॉ॰ लक्ष्मीकान्त वर्मा, डॉ॰ लाल, मणि मधुकर, मुद्राराक्षस, रमेश बक्षी, तथा रामेश्वर, प्रेम ने असंगत नाट्य परम्परा को हिन्दी नाट्य परम्परा में अगली कडी के रूप में जोड़ दिया है। इनके साथ साथ असंगत नाट्य-परम्परा में हमीदुल्ला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः हमीदुल्ला हिन्दी के असंगत नाटककार के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं।

हमीदुल्ला ने मनुष्य जीवन की विभिन्न असंगतियों को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत किया है। उनके नाटको में मानव जीवन की जिन विसंगतियों का चित्रण हुआ है वे पूर्णरूप से यथार्थ और वस्तुस्थित हैं। मानव में विकसित होती पशुता और उसकी परवशता और यांत्रिकता को उन्होंने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उसके साथ-साथ रिश्तों का खोखलापन और मानव में आ गयी संस्कारहीनता का भी पर्दाफाश किया है। वर्तमान में आयी अवसरवादिता वृत्ति के कारण मानव जीवन कितना हैनीय (दयनीय) हुआ है इसका भी चित्रण किया है। उन्होंने अपने नाटकों में नारी शोषण किस तरह होता है और नारी आज भी किस तरह का जीवन व्यतीत करती है इसका चित्रण सफलता के साथ किया है। अतः हमीदुल्ला के नाटकों में विसंगतियों के दर्शन होते हैं।

हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में मनोवैज्ञानिक धरातल पर मनुष्य जीवन के अनेक मनोविकारों, मनोविकृतियों और मनोरचनाओं या रक्षा-युक्तियों को चित्रित किया है। उन्होंने दिन-प्रतिदिन की भूलें, मनोविक्षिप्तता और लैंगिक विकृतियों को इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि ये मनोविकृतियाँ ही वर्तमान के मनुष्य जीवन की अनेक स्थितियाँ बन चुकी हैं। हमीदुलला ने मनोवैज्ञानिक ढंग से मनुष्य जीवन

की विवशता और छटपटाहट को उद्घाटित किया है। जटिल परिस्थितियों के बीच फँसा वर्तमान का मनुष्य अपने मनचाहे ढंग से जी भी नहीं सकता और मर भी नहीं सकता क्योंकि जीना-मरना कुछ भी उसके हाथ में नहीं है। अतः वह जीवन ढोने का असफल प्रयत्न करता है, यही नाटककार ने अपने नाटकों में चित्रित किया है। उनका पात्रों का चित्रांकन मनोवैज्ञानिक ढंग से करना था उद्देश्य नही हैं, फिर भी उनके पात्रों के चरित्र में न के सहज दर्शन होते हैं। स्वप्न, भीड़ और फैशन आदि पर भी हमीदुल्ला ने कुछ मात्रा में प्रकाश डाला है।

हमीदुल्ला के नाटकों का शिल्प भी विशेष महत्वपूर्ण है। हमीदुल्ला ने संवाद और भाषा-शिल्प के द्वारा मनुष्य के असंगत जीवन बोध को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत किया है। असंगत नाटकों में कथा और घटनाओं का महत्व नहीं होता। महत्व होता है उन स्थितियों का जो मनुष्य जीवन की असंगतियों को दर्शाने में सफल हो। उन्होंने पात्रों और चरित्र-चित्रण की भरमार की बजाय आधुनिक मनुष्य जीवन की त्रासद स्थिति को कम पात्रों और उनके चरित्र-चित्रण को गौण स्थान देकर मुखर किया है। हमीदुल्ला का मूल उद्देश्य यह है कि असंगति के द्वारा मनुष्य जीवन में व्याप्त कटु यथार्थ की वास्तविक अभिव्यक्ति। अतः इस दृष्टि से उनके नाटकों के संवाद सक्षम और मानव की टूटी हुई जीवन गाथा का चित्रण करने में सशक्त है। अतः इनके संवादों में इतनी शक्ति है कि वे मनुष्य जीवन के नग्न यथार्थ को सहज अभिव्यक्त करते हैं। हमीदुल्ला असंगत नाटककार होनेके कारण उनके नाटकों की भाषा परम्परागत नाट्यभाषा से भिन्नत्व रखती है। उन्होंने नाटकों में सामान्य बोलचाल की निरावरण भाषा को स्थान दिया है। भाषा के धनी हमीदुल्ला ने अपने नाटकों में सहज, स्वाभाविक, प्रचलित शब्दावली को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने गंभीर बातों को व्यक्त करने के लिए व्यंजनापरक शैली को भी स्थान दिया है। उसके साथ-साथ उनकी भाषा कुछ मात्रा में काव्यात्मक भी हो जाती है।

हमीदुल्ला ने गीत और संगीत का आयोजन पात्रों के मानसिक स्थितियों और उन पर बीती हुई मुसीबतों को यथार्थ रूप से अंकित करने के लिए किया

है। उनके नाटकों के गीत कथावस्तु के अनुसार हैं। उसके साथ-साथ उनके नाटकों में कोरस का प्रयोग भी हुआ है।

नाटककार ने अपने विसंगत नाटकों में मनुष्य जीवन की अनेक विसंगतियों को मुखर करने के लिए बिम्बों और प्रतिकों का भी प्रयोग किया है। उनके नाटकों के कुछ बिम्ब और प्रतीक सार्थक बन गये हैं तो कुछ अस्पष्ट रह चुके हैं। इसी कारण सामान्य दर्शक उनके नाटकों को अच्छी तरह से समझ नहीं पाता। उन्होंने शीर्षकों का प्रयोग सफलता के साथ किया है, जिससे उनके नाटककार होने की प्रतिभा का परिचय अपने आप मिलता है। उन्होंने अपने नाटकों में समाज की किसी न किसी घटना का चित्रण किया है। और उनके नाटकों के शीर्षक भी उसी के अनुरूप रखे गये हैं।

हमीदुल्ला खुद एक सफल नाटककार, अभिनेता और कुशल निर्देशक रहे हैं। अतः उनके असंगत नाटक मंचीयता की दृष्टि से हिन्दी रंग नाटकों के नये प्रतिमान बन गये हैं। उनके नाटक तड़क-भड़क और दिव्यता-भव्यता से दूर है। अतः वे सीधे-साधे यथार्थ और प्रतिकात्मक हैं। उनके नाटकों की मंच व्यवस्था जटिल न होकर सामान्य ही है। उनके नाटकों के अनेक दृश्यबंध विसगत दृश्य योजना के द्वारा दर्शकों और पाठकों को अभिभूत करते हैं। इस संदर्भ में उनके "दरिन्दे" , "उलझी आकृतियाँ" उल्लेखनीय नाट्यसंग्रह हैं। उसके साथ-साथ "उत्तर उर्वशी" भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में मनुष्य जीवन की जो विसंगतियाँ दर्शायी गयी हैं वह भारतीय परिवेश और भारतीय जनजीवन को रेखांकित करती है। अतः हिन्दी के असंगत नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव तो जरूर रहा है। फिर भी हमीदुल्ला ने अपने आसपास जो देखा और भोगा जाता है उसीका चित्रण अपने नाटकों में किया है। हमीदुल्ला हिन्दी के असंगत नाटककारों मे से एक हैं। जिन्होंने असंगत नाटकों की एक अच्छी नींव रची की है। अतः उन्होंने असंगत नाट्य-परम्परा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनके असंगत नाटक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हिन्दी में असंगत नाटकों की संख्या सीमित ही है। फिर भी वह

जितनी भी है उतनी ही मानव जीवन के नग्न यथार्थ और असंगत जीवन बोध को व्यंजित कर देती है। ~~अतः~~ इस द्वारा उनका महत्व अनन्य साधारण है।

1. व्याकरण सम्मत वाक्य रचना का अभ्यास आवश्यक है।
2. वर्तनी की त्रुटियों में सुधार अपेक्षित है।
3. समापन के अंश प्रस्तुत में उदाहरण के तौर पर नाटकों करना आवश्यक है।